विचार बिन्दु

निरन्तर बदलने की इच्छा रखना एक ताकत होती है, चाहे इसकी वजह से कंपनी का एक बड़ा हिस्सा कुछ देर के लिए पूरी तरह से अव्यवस्थित क्यों ना हो जाए। –जैक वेल्व

प्राकृतिक खेती : कहीं "Begging Bowl" की ओर लौटने का खतरा तो नहीं?

प्रधानमंत्री Narendra Modi ने देशभर के किसानों से प्राकृतिक खेती अपनाने का आग्रह किया है। उनका कहना है कि प्राकृतिक खेती 21वीं सदी की कृषि आवश्यकताओं के अनुरूप है और यह भारत को रसायन-मुक्त कृषि का वैश्विक केंद्र बना सकती है। निस्संदेह, प्राकृतिक खेती पर्यावरण संरक्षण, मिट्टी की उर्वरता तथा मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण विचार है।

प्राकृतिक खेती अर्थात ऐसी खेती प्रणाली जिसमें किसान रासायनिक खाद, कीटनाशकों और अत्यधिक बाहरी संसाधनों पर निर्भर न रहे। इस पद्धति का मूल सिद्धांत है – प्रकृति के साथ चलो, उसके विरुद्ध नहीं। इसमें खेत पर ही खाद, बीज और जैविक घोल तैयार करने पर बल दिया जाता है। देशी गाय के गोबर एवं गौमूत्र से खाद बनाना, स्वयं बीज तैयार करना तथा रासायनिक इनपुट से दूरी रखना इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।

किन्तु प्रश्न यह है कि क्या केवल प्राकृतिक खेती के सहारे 145 करोड लोगों के देश का पेट भरा जा सकता है? क्या हम भावनाओं में बहकर इतिहास के उन कठिन अध्यायों को भूल रहे हैं, जब भारत खाद्यान्न के लिए विदेशों पर निर्भर था?

"Begging Bowl" का दौर : जब भारत अनाज के लिए मोहताज था

1950 के दशक में भारत को "Begging Bowl" अर्थात भिखारी का कटोरा कहा जाता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं था। देश की लगभग 70-75 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर थी, लेकिन खेती पूरी तरह पारंपरिक पद्धतियों से होती थी। बैल, हल और देशी औजारों के सहारे खेती होती थी। सिंचाई के साधन सीमित थे और अधिकांश खेती मानसून पर निर्भर थी।

उस समय उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक और आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का अभाव था। किसान गोबर खाद और जैविक पदार्थों का ही उपयोग करते थे। वस्तुत: 1950 से पहले भारत में लगभग 100 प्रतिशत खेती प्राकृतिक ही थी।

लेकिन परिणाम क्या थे?

1950-51 में गेहूं की औसत पैदावार मात्र 6.6 क्विंटल प्रति हेक्टेयर थी, जबकि आज यह लगभग 35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक पहुँच चुकी है।

1951 में भारत को लगभग 47 लाख टन अनाज आयात करना पड़ा।

1956 से 1971 तक भारत अमेरिका की PL-480 योजना के अंतर्गत गेहूं आयात करता रहा।

1966 में अकेले लगभग 1 करोड टन गेहूं अमेरिका से आया।

उस समय भारत की स्थिति "Ship to Mouth Economy" जैसी थी – जहाज से गेहूं उतरता था और सीधे राशन दुकानों तक पहुँचता था।

1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान अमेरिका ने गेहूं आपूर्ति रोकने की धमकी तक दी थी। यह स्थिति केवल आर्थिक कमजोरी नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान पर भी आघात थी। इसी पृष्ठभूमि में तत्कालीन प्रधानमंत्री Lal Bahadur Shastri ने जय जवान, जय किसान का नारा दिया और देशवासियों से एक दिन उपवास रखने की अपील की।

यह सत्य है कि रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग ने मिट्टी की सेहत, जल गुणवत्ता और मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाले हैं। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्रों में भूमि की उर्वरता में गिरावट और भूजल संकट गंभीर चिंता का विषय हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हम पूरी तरह 1960 से पूर्व की खेती व्यवस्था में लौट जाएँ।

स्पष्ट है कि उस समय की प्राकृतिक खेती भारत को खाद्यान्न आत्मनिर्भरता नहीं दे सकी थी।

हरित क्रांति : "Begging Bowl" mes "Food Basket" तक

1965 के बाद भारत की कृषि व्यवस्था में ऐतिहासिक परिवर्तन आया। इसे हरित क्रांति कहा गया।

इस परिवर्तन के प्रमुख आधार थे-

1. उच्च उत्पादकता वाले HYV बीज
2. रासायनिक उर्वरकों का उपयोग
3. कीटनाशकों का प्रयोग
4. सिंचाई सुविधाओं का विस्तार
5. MSP एवं FCI जैसी सरकारी व्यवस्थाएँ

Norman Borlau द्वारा विकसित बौने गेहूं के बीज तथा IR-8 धान की किस्मों ने उत्पादन में क्रांतिकारी वृद्धि की।

परिणामस्वरूप-

1950 में 65 लाख टन गेहूं उत्पादन बढ़कर 1968 में 170 लाख टन हो गया।

2024-25 में भारत का गेहूं उत्पादन लगभग 1179 लाख टन तथा चावल उत्पादन लगभग 1501 लाख टन तक पहुँच गया।

कुल खाद्यान्न उत्पादन लगभग 3546 लाख टन हो चुका है।

आज भारत विश्व का सबसे बड़ा चावल निर्यातक देश है।

भारत का कृषि निर्यात 2024-25 में लगभग 49.43 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया।

आज भारतीय खाद्य निगम (FCI) के गोदामों में लाखों टन गेहूं और चावल उपलब्ध है। भारत अब खाद्यान्न आयातक नहीं, बल्कि निर्यातक राष्ट्र बन चुका है।

यह परिवर्तन केवल भावनाओं से नहीं, बल्कि विज्ञान, अनुसंधान, उर्वरकों, उन्नत बीजों और कृषि तकनीकों के कारण संभव हुआ।

क्या केवल प्राकृतिक खेती समाधान है?

यह सत्य है कि रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग ने मिट्टी की सेहत, जल गुणवत्ता और मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाले हैं। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्रों में भूमि की उर्वरता में गिरावट और भूजल संकट गंभीर चिंता का विषय हैं।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हम पूरी तरह 1960 से पूर्व की खेती व्यवस्था में लौट जाएँ।

आज भारत की जनसंख्या लगभग 145 करोड है। यदि 1950 की उत्पादकता के स्तर पर खेती की जाए, तो देश को वर्तमान आवश्यकता पूरी करने के लिए शायद दोगुनी कृषि भूमि चाहिए होगी, जो संभव नहीं है।

अत: आवश्यकता प्राकृतिक बनाम वैज्ञानिक खेती की लडाई की नहीं, बल्कि संतुलित कृषि नीति की है। हमें ऐसी "Evergreen Revolution" की आवश्यकता है जो-

उत्पादन भी बनाए रखे,
मिट्टी की सेहत भी सुधारे,
जल संरक्षण भी करे,
तथा किसानों की आय भी बढ़ाए।

निष्कर्ष:– प्राकृतिक खेती का विचार स्वागतयोग्य है, लेकिन इसे भावनात्मक आंदोलन बनाकर वैज्ञानिक तथ्यों की अनदेखी करना खतरनाक हो सकता है।

भारत ने हरित क्रांति के माध्यम से "Begging Bowl" से निकलकर खाद्यान्न आत्मनिर्भरता प्राप्त की है। यदि हम बिना ठोस वैज्ञानिक योजना के पूरी तरह पारंपरिक कृषि प्रणाली की ओर लौटते हैं, तो खाद्य सुरक्षा पर संकट उत्पन्न हो सकता है।

किसान की थाली और देश की खाद्य सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। पर्यावरण संरक्षण भी आवश्यक है, लेकिन भूखे पेट पर्यावरण की चिंता लंबे समय तक टिक नहीं सकती।

इसलिए समाधान अंध-विरोध या अंध-समर्थन में नहीं, बल्कि संतुलित, वैज्ञानिक और टिकाऊ कृषि नीति में निहित है।

–अतिथि सम्पादक,
डा. पी. सी. कंठालिया,
पूर्व प्रोफेसर एवं मुख्या मृदा वैज्ञानिक
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, उदयपुर

चंद रुपयों के लालच में युवाओं का भविष्य कर रहे खराब: समाज के नैतिक पतन की भयावह तस्वीर !

सुनील दत्त गोयल

आज पूरे विश्व में, और खास तौर से भारत में, कम समय में बहुत तेजी से अधिक पैसा कमाने की एक अंधी होड़ लगी हुई है। यह होड़ केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं रही, बल्कि अब यह सामाजिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों को भी निगलने लगी है। भले ही किसी व्यक्ति के पास पर्याप्त ज्ञान हो या न हो, लेकिन झूठ बोलकर, धोखा देकर, धोखाधड़ी करके, अत्याचार करके, किसी को परेशान करके और खास तौर पर अपनों को धोखा देकर पैसा कमाने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ती जा रही है।

आज हालत यह है कि चाहे आपके पड़ोसी हों, आपके यार-दोस्त हों या आपके वर्षों पुराने संबंध – उनमें भी अधिकतर लोग एक-दूसरे को धोखा देने में कोई शर्म महसूस नहीं करते। यह केवल व्यक्तिगत स्तर का बदलाव नहीं है, बल्कि यह सामाजिक ताने-बाने के विघटन का संकेत है। खास तौर पर यह कहा जाए कि आपसी प्रेम, विश्वास और सम्मान जैसे मूल तत्व धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं।

मेरे पिताजी और दादाजी कहा करते थे कि जहां प्यार हो, वहां व्यापार नहीं करना चाहिए। यह वाक्य केवल एक सीख नहीं था, बल्कि भारतीय समाज की आत्मा का हिस्सा था। लेकिन मुझे उस समय गहरा आश्चर्य हुआ जब सन 2000 में मुझे भारत की एक अठाणी निजी इंश्योरेंस कंपनी में विषय विशेषज्ञ के रूप में ट्रेनिंग देने के लिए बुलाया था। वहां लगभग 200 युवा लड़के-लड़कियां मौजूद थे, जिन्हें इंश्योरेंस एजेंट बनाया जाना था। मुझसे पहले जो भी कंपनी के प्रवक्ता थे, उन्होंने जो प्रशिक्षण दिया, वह बेहद चिंताजनक था।

युवाओं को यह सिखाया गया कि सबसे पहले अपने घर जाओ, अपने माता-पिता से उनके परिचितों, रिश्तेदारों और आर्थिक रूप से सक्षम लोगों की सूची बनवाओ। फिर उन्हीं के माध्यम से फोन करवा कर उन्हें इंश्योरेंस बेचो। उस समय यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस पॉलिसी को प्रमुखता से बेचा जा रहा था, जिसमें लगभग 70 प्रतिशत तक कमीशन मिलता था। यह देखकर मैं दंग रह गया कि लगभग 40 वर्ष के युवा ट्रेनर अन्य युवाओं को किस दिशा में ले जा रहे हैं।

यहीं से यह स्पष्ट हो गया कि देश का युवा किस गड्ढे की ओर बढ़ रहा है – और दुखद यह है कि उसे धकेलने वाले भी युवा ही हैं। इस प्रवृत्ति में महिला या पुरुष का कोई भेद नहीं है – सभी समान रूप से शामिल हैं। प्रोडक्ट बेचना है, चाहे सामने वाले का कितना भी नुकसान क्यों न हो। यदि हमें 1 का लाभ हो और सामने वाले को 10,000 का नुकसान हो, तब भी कोई हिचक नहीं होती। यह मानसिकता आज और भी खतरनाक रूप ले चुकी है, खासकर ई-कॉमर्स के दौर में, जहां फर्जी उत्पादों और झूठे वादों की भरमार है। ग्राहक को भ्रमित करना अब एक सामान्य व्यापारिक रणनीति बन गई है।

काउंसलर सेवाओं का उद्देश्य मूल रूप से लोगों को मानसिक, भावनात्मक और पारिवारिक समस्याओं से उबारना होता है। लेकिन आज जिस तरह यह क्षेत्र भी व्यावसायिक लालच की गिरफ्त में आता जा रहा है, वह अत्यंत चिंताजनक है। ऑनलाइन और ऑफलाइन काउंसलिंग सेवाएं देने वाले कुछ तथाकथित विशेषज्ञ पहले तो लोगों की निजी समस्याओं को बेहद सहानुभूति के साथ सुनते हैं, उनका विश्वास जीतते हैं, और फिर उसी विश्वास को हथियार बनाकर ब्लैकमेलिंग का माध्यम बना लेते हैं।

व्यक्ति जब किसी काउंसलर, क़ानूनी, कर विशेषज्ञ, चिकित्सक आदि के पास जाता है, तो वह अपने जीवन के सबसे संवेदनशील पहलुओं को साझा करता है – वैवाहिक तनाव, आर्थिक संकट, व्यक्तिगत रिश्तों की जटिलताएं, मानसिक स्वास्थ्य की परेशानियां, कानूनी पेचीदगियों, टैक्स की समस्याओं, बिमारियों से छुटकारा पाने के लिए जाता है। यह जानकारी अत्यंत गोपनीय होती है और उन सबका यह नैतिक दायित्व होता है कि वे इसे गोपनीय रखें। लेकिन जब यही जानकारी पैसे ऐंठने का जरिया बन जाए, तो यह केवल पेशेवर धोखाधड़ी नहीं, बल्कि मानवता के साथ विश्वासघात है।

ऐसे कई मामले सामने आ रहे हैं जहां ये लोग पहले सस्ती फीस या मुफ्त सलाह के नाम पर लोगों को जोड़ते हैं, और जब व्यक्ति पूरी तरह भावनात्मक रूप से निर्भर हो जाता है, तब उससे अनुचित मांग की जाती है। यदि कोई व्यक्ति मना करे, तो उसकी निजी बातचीत या रिकॉर्डिंग सार्वजनिक करने की धमकी दी जाती है। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने इस खतरे को और बढ़ा दिया है, क्योंकि ऑनलाइन सेशंस को रिकॉर्ड करना और उसका दुरुपयोग करना बेहद आसान हो गया है।

यह प्रवृत्ति इसलिए और खतरनाक है क्योंकि इसमें पीड़ित व्यक्ति पहले से ही मानसिक रूप से कमजोर स्थिति में होता है। वह न्याय या शिकायत करने के बजाय डर और शर्म के कारण चुप रहना ही बेहतर समझता है। परिणामस्वरूप, यह एक ऐसा साइलेंट क्राइम बन जाता है, जो न तो खुलकर सामने आता है और न ही उस पर सख्त कार्रवाई हो पाती है।

दूसरी ओर, आज का युवा वर्ग तेजी से नशे, जुए/ऑनलाइन गेमिंग की लत में फंसता जा रहा है। यह केवल एक सामाजिक समस्या नहीं, बल्कि एक आपराधिक प्रवृत्ति की जड़ बनती जा रही है। शुरुआत अक्सर मस्ती या ट्रेंड के नाम पर होती है – दोस्तों के साथ हुक्का, शराब, या ऑनलाइन गेमिंग और सट्टेबाजी। लेकिन धीरे-धीरे यही आदत लत में बदल जाती है।

जब यह लत गहरी हो जाती है, तो व्यक्ति की सोचने-समझने की क्षमता प्रभावित होने लगती है। उसे केवल पैसे की जरूरत महसूस होती है- चाहे वह किसी भी तरीके से आए। यही वह बिंदु है जहां एक सामान्य युवा अपराध की ओर मुड़ जाता है। चंद हजार या कभी-कभी तो कुछ सौ रुपये के लिए भी झगड़े, लूटपाट और यहां तक कि हत्या जैसी घटनाएं सामने आने लगी हैं।

यह बेहद भयावह स्थिति है कि आज कुछ युवा इतने असंवेदनशील हो चुके हैं कि मामूली आर्थिक लाभ के लिए किसी की जान लेने में भी उन्हें हिचक नहीं होती। नशा उनके भीतर की संवेदनाओं को खत्म कर देता है और जुआ उन्हें त्वरित पैसे की आदत डाल देता है। यह संयोजन उन्हें एक खतरनाक मानसिक स्थिति में पहुंचा देता है, जहां सही और गलत का भेद पूरी तरह धुंधला हो जाता है। समस्या का एक और गंभीर पहलू यह है कि सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर इस तरह की गतिविधियों को बढ़ावा मिल रहा है। जल्दी पैसा कमाने के वीडियो, सट्टेबाजी ऐप्स के विज्ञापन, और नशे को ग्लैमराइज करने वाली कंटेंट – ये सब युवाओं को गलत दिशा में धकेल रहे हैं।

स्पष्ट है कि यह केवल व्यक्तिगत विफलता नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक और व्यवस्थागत संकट है। काउंसलिंग जैसे संवेदनशील क्षेत्र का दुरुपयोग और युवाओं का अपराध की ओर झुकाव – दोनों ही इस बात के संकेत हैं कि हमने अपने मूल्यों और नियंत्रण तंत्र को कहीं न कहीं खो दिया है। यदि समय रहते इस पर कठोर कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले वर्षों में यह समस्या और विकराल रूप ले सकती है – जहां न तो व्यक्ति सुरक्षित रहेगा, न समाज, और न ही भविष्य।

समाज का पतन केवल आर्थिक धोखाधड़ी तक सीमित नहीं है। शहरों में चल रहे हुक्का बार, महिलाओं की किटी पार्टियों में नशीले पदार्थों का प्रयोग, और भोजन या पेय पदार्थों में अल्कोहल मिलाकर लोगों को धीरे-धीरे उसकी आदत डालना। इसी तरह, कई रेस्टोरेंट और होटल संचालक महिलाओं की किटी पार्टियों में चोरी छिपे धीरे-धीरे अल्कोहल मिलाकर उन्हें इसकी आदत डालते हैं। यह एक खतरनाक और अनैतिक व्यापार मॉडल है – ये सब एक सुनियोजित सामाजिक गिरावट के संकेत हैं। जिम जिहाद जैसे शब्दों का प्रचलन भी इसी असंतुलन का परिणाम है।

लगभग 30 वर्ष पूर्व महाराष्ट्र में एक पूर्व पुलिस अधिकारी को शराब पीकर गाड़ी चलाने के आरोप में पकड़ लिया गया, जबकि उन्होंने शराब नहीं पी थी। बाद में जांच में पाया गया कि उन्होंने जो पान खाया था उस पान में नशीला पदार्थ मिलाया गया था। वो पान वाला वोदका शराब में 24 घंटे तक चेरी को डुबो कर रखता था। इससे स्पष्ट होता है कि कैसे आमजन को बिना जानकारी के नशे का आदी बनाया जा रहा है। लगभग 40 वर्ष पहले एक चायवाले को चाय में अफीम मिलाकर बेचते हुए पकड़ा गया था। उसकी दुकान पर भीड़ इसलिए लगती थी क्योंकि उसकी चाय का स्वाद अलग था। यह उदाहरण बताता है कि लोगों की मानसिकता को कैसे नशे और लालच के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है। वरिष्ठ पत्रकार विनिता यादव द्वारा उजागर किए गए वाइफ स्वैपिंग जैसे मामलों ने यह दिखा दिया है कि समाज किस स्तर तक गिर चुका है। यह केवल व्यक्तिगत विचलन नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक संकट है।

आज अधिकतर अपराधों में 2-3 नाबालिग बच्चों की संलिप्तता देखी जाती है, क्योंकि उन्हें जल्दी जमानत मिल जाती है। बड़े अपराधी इस लूपहोल का फायदा उठाकर युवाओं को अपराध की दुनिया में धकेल रहे हैं। शिक्षा और कौशल के बजाय अपराध अब करियर विकल्प बनता जा रहा है। आज के आधुनिक दौर में हुक्का बार, मसाज पार्लर, और रेस्टोरेंट्स में परोसे जाने वाले विशेष पदार्थों में मिलाए जाने वाले नशीले तत्वों को आमजन स्वाद के रूप में स्वीकार कर चुका है। सरकार को इसकी जानकारी होने के बावजूद भी कोई ठोस कार्रवाई नहीं होती। यह केवल प्रशासनिक विफलता नहीं, बल्कि सामाजिक सहमति का भी संकेत है।

भूमाफिया, रेत माफिया, ड्रग माफिया, और एनबीएफसी के रिकवरी एजेंट – ये सभी एक ऐसे तंत्र का हिस्सा बन चुके हैं, जहां युवाओं को झूठ बोलने और लोगों को ठगने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। बिल्डर और लैंड डेवलपर भी अब अपने स्टाफ को हटाकर उन्हें दलाल बना रहे हैं, ताकि वे खुद बिक्री करें और अपना कमीशन निकालकर बाकी पैसा कंपनी को दें।

स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि कई जगहों पर फ्लैट के मालिक होने के बावजूद लोग अपने ही घर में प्रवेश नहीं कर सकते। बिल्डर कब्जा देने के बाद भी डुप्लीकेट चाबियां अपने पास रखकर फ्लैट को किराए पर चला रहे हैं। यह केवल धोखाधड़ी नहीं, बल्कि कानून और व्यवस्था का खुला मजाक है। यदि फ्लैट मालिक धोखाधड़ी की शिकायत दर्ज कराने सम्बंधित थाने में जाता है तो उसे निराश होकर ही लौटना पड़ता है।

जब इतने बड़े स्तर पर यह सब हो रहा है, तो यह स्पष्ट है कि पैसा कमाना ही एकमात्र उद्देश्य रह गया है। अपने ब्रांड, अपने परिवार, और अपने पूर्वजों की प्रतिष्ठा – सब कुछ दांव पर लगा दिया गया है।

पिछले 10 वर्षों में हनी ट्रैप के मामलों में भी तेजी से वृद्धि हुई है। इसमें महिलाएं पुरुषों से संबंध बनाकर उन्हें ब्लैकमेल करती हैं, और कई मामलों में उनके पति भी इसमें शामिल होते हैं। यह केवल नैतिक पतन नहीं, बल्कि पारिवारिक संस्था का विघटन है।

इसी प्रकार, अनुसूचित जाति/जनजाति, दहेज और घरेलू हिंसा जैसे कानूनों का दुरुपयोग भी अधिकतर मामलों में पैसे के लिए किया जा रहा है। इससे न केवल निर्दोष लोग फंसते हैं, बल्कि वास्तविक पीड़ितों के लिए न्याय पाना भी कठिन हो जाता है। आज की युवा पीढ़ी में यह सोच घर कर चुकी है कि पैसा कमाओ, चाहे जैसे भी कमाओ। भ्रष्टाचार, रिश्वत और अपराध अब डर का विषय नहीं रहे। जेल जाना भी अब शर्म की बात नहीं मानी जाती, क्योंकि बड़े-बड़े लोग भी जेल जा चुके हैं और उनका ये मानना है की खूब अनैतिक काम / भ्रष्टाचार करो और रिश्वत देकर छूट जाओ क्योंकि हर शक्श बिकने को तैयार है बस खरीदार होना चाहिए, ऐसी आम धारणा बन गई है।

इंश्योरेंस, बैंकिंग, म्यूच्यूअल फंड, क्रेडिट कार्ड और फाइनेंशियल सेक्टर में रॉंग-सेलिंग की समस्या इतनी गहरी है कि उसका सही आकलन करना मुश्किल है। सही जानकारी छुपाकर, गलत जानकारी देकर और जोखिमों को नजरअंदाज करके प्रोडक्ट बेचना अब सामान्य प्रथा बन चुकी है। यहां तक कि बैंकों की सेलिंग टीम भी कई मामलों में इस खेल का हिस्सा बन चुकी है।

अंतत: प्रश्न यह उठता है कि हमारा समाज किस दिशा में जा रहा है? क्या आर्थिक प्रगति के नाम पर हम अपनी नैतिकता और संस्कारों को पूरी तरह खो चुके हैं? यदि यही स्थिति बनी रही, तो आने वाली पीढ़ियां केवल आर्थिक रूप से समृद्ध होंगी, लेकिन नैतिक रूप से दिवालिया।

समय आ गया है कि हम इस अंधी दौड़ को रोकें – वरना यह लालच हमें पूरी तरह निगल जाएगा।

–रोटेरियन सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री

इजराइल-अमेरिका-ईरान युद्ध : पूंजी-सत्ता-अहंकार का वीभत्स प्रदर्शन: विश्व मानव समाज असहाय

28 फरवरी को शुरू हुआ युद्ध बंद होना चाहिए। वरना इतिहास लिखेगा: ''2026 में दो नेताओं की जिद ने 800 करोड़ लोगों की रोटी छीन ली''

मदन सिंह काला

28 फरवरी, 2026 की सुबह जब दुनिया अखबार खोल रही थी, तब तक मिडिल ईस्ट में युद्ध के नए मोर्चे खुल चुके थे। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की साझा नीति ने उस दिन से वैश्विक स्थिरता को बंधक बना लिया है। तीन महीने बीत चुके हैं, पर तेल के दाम, शरणार्थी संकट और शेयर बाजार की गिरावट बता रही है कि ये लड़ाई सिर्फ गाजा या ईरान की नहीं – आम आदमी की थाली की है।

-1. युद्ध का अर्थशास्त्र: किसे फायदा?- 28 फरवरी के बाद अमेरिकी रक्षा कंपनियों के शेयर 40 प्रतिशत उछले। इजराइल को नए हथियार पैकेज मिले। उधर, कच्चा तेल 110 डॉलर पार कर गया। भारत जैसे आयातक देशों में पेट्रोल 120 रु. लीटर छू रहा है, आटा-दाल 20 प्रतिशत महंगी। जब बम गिरते हैं, तो सबसे पहले गरीब की रसोई जलती है। पूंजीवादी हठधर्मिता यही है – युद्ध को बाजार का अवसर बनाना।

-2. मानवता की कीमत- के मुताबिक 28 फरवरी के बाद गाजा, लेबनान और ईरान में 1.2 लाख लोग विस्थापित हुए। लाल सागर में जहाजों पर हमले से गेहूं-खाद की सप्लाई टूटी। अफ्रीका में भुखमरी की चेतावनी जारी है। स्कूल-अस्पताल खंडहर हैं। नेतन्याहू इसे सुरक्षा कहते हैं, ट्रंप इसे शक्ति-प्रदर्शन। पर बीकानेर के किसान से पूछिए जिसे डीएपी 2000 रु. बोरी मिल रही है – उसके लिए ये आर्थिक युद्ध है।

-3. कूटनीति की कब्र- 2015 का ईरान परमाणु समझौता ट्रंप पहले कार्यकाल में तोड़ चुके थे। 2026 में बातचीत की मेज की जगह मिसाइल चुन ली गई। नेतन्याहू घरेलू भ्रष्टाचार केस और चुनावी संकट से ध्यान भटकाने के लिए मोर्चा गर्म रख रहे हैं। जब नेता की कुर्सी खतरे में हो, तो सीमा पर तनाव सबसे सस्ता नारा बन जाता है। ये पूंजी सत्ता का वही गठजोड़ है जिसे 1950 में हमारा संविधान नकार चुका था।

-4. भारत पर असर: हम क्यों बोलें?- भारत का 85 प्रतिशत तेल आयात होता है। हर 10 डॉलर बढ़त से चालू खाता घाटा 15 अरब डॉलर बढ़ता है। वर्तमान में एक यू.एस. डॉलर का मूल्य 96 रुपया पर पहुंच गया है। इससे महंगाई बढ़ती जा रही है। डोनाल्ड ट्रंप हमारे देश के लिए तो तानाशाह बन गया है। हम रूस और ईरान से तेल खरीदते थे, जहां से हमें सस्ता व कम समय में तेल मिलता था। अब यहां से डोनाल्ड ट्रंप के कहने पर भारत ने तेल खरीदना बंद कर दिया है। प्रवासी मजदूर खाड़ी देशों से लौट कर बेरोजगार बन रहे हैं। न मॉस्को हमारा दुश्मन है, न तेहरान, न तेल अवीव – पर युद्ध की कीमत हम चुका रहे हैं। पं. नेहरू ने पंचशील दिया था, आज जरूरत पंच-प्रस्ताव की है: युद्ध-विराम, तेल-कार्टेल पर लगाम, मानवीय गलियारा, परमाणु-संवाद, और हथियार लॉबी की जांच।

-निष्कर्ष: युद्ध प्रॉफिट नहीं, प्रलय है- ट्रंप और नेतन्याहू भूल रहे हैं कि 21वीं सदी में कोई जीतता नहीं – सिर्फ मानवता हारती है। जिस दिन न्यूयॉर्क का ब्रोकर और गाजा का बच्चा एक ही पन्ने पर रोएगा, उस दिन समझ आएगा कि पूंजी की हठधर्मिता से बड़ी कोई तोप नहीं होती।

28 फरवरी को शुरू हुआ युद्ध बंद होना चाहिए। वरना इतिहास लिखेगा: ''2026 में दो नेताओं की जिद ने 800 करोड़ लोगों की रोटी छीन ली''।

इसलिए विश्व के सभी देशों को चाहिए कि वे डोनाल्ड ट्रंप और नेतन्याहू की हठधर्मिता को सहन करने बजाए उनका सामूहिक रूप से विरोध कर, विश्व में युद्ध न हों, का निर्णय करावें ताकि इस पृथ्वी ग्रह की मानवता को शांति, प्रेम और आनंद के मार्ग पर चलने का अवसर मिल सके।

-मदन सिंह काला,
पूर्व आई.एस.

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 21 मई, 2026

प्रथम ज्येष्ठ मास (अधिक), शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, गुरुवार, विक्रम संवत 2083, पुष्य नक्षत्र रात्रि 2:49 तक, गंड योग दिन 10:58 तक, बालव करण प्रात: 8:27 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मेष, बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि और अमृत सिद्धि योग और गुरू पुष्य योग रात्रि 2:49 तक है। रवियोग रात्रि 2:49 तक रहेगा। आज सायन मिथुन में सूर्य प्रवेश प्रात: 6:07 पर करेगा। आज गुरू पुष्य योग है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:21 तक, चर 10:43 से 12:23 तक, लाभ-अमृत 12:23 से 3:45 तक, शुभ 5:25 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:40, सूर्यास्त 7:06

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में सफलता से आत्मविश्वास बढ़ेगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कारणों से मन में असंतोष बना रहेगा। पारिवारिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी और व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कुंभ
विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। नवीन व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।